श्री नरेन्द्र मोदी,
प्रधानमंत्री, भारत सरकार,
नई दिल्ली, भारत।

विषयः गंगा नदी के निर्मलीकरण हेतु सुझाव एवं प्रस्ताव।

वर्तमान समय में गंगा नदी का अस्तित्व खतरे में है, यह स्थिति वर्षों से है और निरन्तर बिगड़ ही रही है। नदी सूख रही है, उसे दूषित किया जा रहा है। स्थिति यह है कि नदी में रहने वाले जलीय जीवों और वनस्पतियों पर भी संकट मंडरा रहा है। मछलियाँ ऐसी विपरीत और खतरनाक परिस्थितियों में किसी प्रकार जी रही हैं और नदी के पर्यावरण को स्वच्छ करने में अपनी अमूल्य भूमिका निभा रही हैं। यह बुरी स्थिति मनुष्य ने पैदा की है। लेकिन मनुष्य इतने मात्र से संतुष्ट नहीं है, वो जल/ नदी के पर्यावरण की रक्षा करने वाली जल की रानी मछली को अत्यधिक बड़े पैमाने पर मार- मार कर ख़त्म कर रहा है, और यही काम मनुष्य अन्य जलीय जीवों के साथ भी कर रहा है।

स्मरण रहे बगैर त्याग और बलिदान के लक्ष्य हासिल नहीं होगा। एक बात और वह यह की गंगा नदी का निर्मलीकरण मनुष्य के बस की बात नहीं है। मनुष्य की भूमिका यह होनी चाहिए कि वह नदी के साथ की जाने वाली अपनी बद्दतमीजियों को बंद कर दे। नदी की रक्षा यदि कोई कर सकता है तो वह हैं - सघन वन, वन्य जीव, परिन्दे, जलीय जीव और भारत का मुकुट हिमालय।

नदी के सामानांतर कम से कम ५ किलोमीटर क्षेत्र में (चौड़ाई ५ किलोमीटर) सघन वन लगाने होंगे जहां मनुष्य की स्वच्छंद आवाजाही पर प्रतिबन्ध हो, और जो वन क्षेत्र पहले से मौजूद हैं उनकी रक्षा की जाए और उनके दायरे २०% तक बढ़ा दिए जाएं। समस्या- अवैध निर्माण, अनधिकृत बस्तियां, शहरीकरण आदि बाधा बनेंगे, लेकिन स्मरण रहे- बगैर त्याग, बलिदान के लक्ष्य हसिल नहीं होगा।

मनुष्य यदि ये सोचता है कि अपने गंदे नालों का पानी फ़िल्टर करके नदी में गिरा देंगे तो उसे ऐसा नहीं करना चाहिए बल्कि अलग से मानव निर्मित नहर बना कर उसमें नालों का पानी फ़िल्टर करके गिराना चाहिए और पीकर दिखाना चाहिए। नदियों की तरफ खुलने वाले मनुष्यो के सभी नालों को काट देना चाहिए आदि।

मेरा प्रस्ताव है कि यदि इस क्षेत्र में मुझे बड़े स्तर पर अधिकार मिले तो मै गंगा के निर्मलीकरण एवं अस्तित्व की रक्षा के लिए ठोस काम कर सकता हूँ मगर यह अधिकार गंगा सहित अन्य नदियों के लिए भी हो।

निवेदन है कि मेरे थोड़े लिखे को भी बहुत समझें।

आपका अमित श्रीवास्तव
10/07/2017
nationaldefencetrust@gmail.com